**ओ३म्**

**-वैदिक साधन आश्रम तपोवन के 22 सितम्बर 2017 को सम्पन्न कार्यक्रम-**

**‘प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो, प्रभु तुम गगन**

**से विशाल होः पं. सत्यपाल पथिक’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

दिनांक 22-9-2017 को वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के शरदुत्सव का तीसरा दिन था। कार्यक्रम रविवार 24-9-2017 को समाप्त होगा। आज प्रातः 5.00 बजे योगाभ्यास का प्रशिक्षण दिया गया। उसके बाद 6.30 बजे से ऋग्वेद के मन्त्रों से पांच यज्ञ कुण्डों में यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में ऋग्वेद के सूक्तो की समाप्ति पर यज्ञ की ब्रह्मा डा. प्रियंवदा वेदभारती जी ने सूक्त में आये मन्त्रों में निहित शिक्षाओं पर संक्षेप में प्रकाश भी डाला। डा. वेदभारती जी एक मधुवर्षी एवं प्रभावशाली वक्ता हैं और विषय पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत करती हैं। तपोवन में आये सभी धर्म प्रेमी और साधक आपके विचारों से लाभान्वित हो रहे हैं। यज्ञ के अनन्तर श्री रूहेल सिंह जी और पंडित सत्यपाल पथिक जी के प्रभावशाली भजन वा गीत भी हुए। यज्ञ की समाप्ती के बाद आचार्या प्रियंवदा जी और आगरा से पधारे विद्वान श्री उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का उपदेश हुआ। आज प्रातः 10.00 बजे से 1.00 बजे तक आश्रम के भव्य एवं विशाल सभागार में महिला सम्मेल्लन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में गुरूकुल पौंधा के ब्रह्मचारी देवव्रत और कन्या गुरूकुल देहरादून और नजीबाबाद की ब्रह्मचारियों के भजन वा गीत हुए। बाहर से पधारी माताओं ने अपनी कविता आदि के द्वारा भी प्रस्तुतियां दीं। शास्त्रीय गायक बहिन मनाक्षी पंवार जी ने भी इस अवसर पर एक मधुर भजन गाया जिसके बोल थे ‘महिलाओं इस जहां की शोभा तुम हो। निर्माण करने वाली तुम शक्ति महान तुम हो।।’ अपने प्रवचन में बहिन सरोज जी ने कहा कि आज नारी भटक गई है। वह यह सोचती है कि आज कहां जाऊं, किस बाबा के पास, किट्टी पार्टी या क्लब में? उन्होंने कहा कि नारी आध्यात्मिक विचारों वाली होती है। उसका ध्यान अन्य कार्यों सहित परमात्मा में भी होता है। उन्होंने श्रोताओं को कहा कि सबको उषाकाल में जाग जाना चाहिये। इससे आपको जीवन में अनेक लाभ होंगे। द्रोणस्थली कन्या गुरूकुल की आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि महिला का अर्थ ऐसी नारी है जो पूजा के योग्य होती है। उन्होंने कहा कि नारी राष्ट्र का आधार होती है। नारी का स्थान समाज में ऊंचा है। माता के गर्भ में ही सन्तानों को संस्कार मिलते हैं। आपने कुछ प्रसिद्ध ऐतिहासिक नारियों माता कौशल्या, जीजाबाई, महारानी लक्ष्मीबाई आदि के उदाहरण दिये। आचार्या जी ने आधुनिक नारियों की यथार्थ स्थिति का भी दिग्दर्शन कराया। इसके बाद दिल्ली की माता सरदाना जी ने स्वरचित कविताओं का पाठ किया जिसमें समाज व देश हित के विषयों सहित हास्य व व्यंग की मात्रा भी मिली हुई थी।

पं. सत्यपाल पथिक जी ने इसके बाद अपना सर्व प्रसिद्ध भजन प्रस्तुत किया। भजन के बोल थे **‘प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो, प्रभु तुम गगन से विशाल हो। मैं मिसाल दूं तुम्हें कौन सी। दुनियां में तुम बेमिसाल हो।।’** पथिक जी के बाद आगरा से पधारे आर्य विद्वान श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने सम्मेलन को सम्बोधित किया। उन्होंने सम्मेलन व श्रोताओं का ध्यान कर्नाटक की देवदासी प्रथा जो वहां के प्रसिद्ध येलूप्पा देवी के मन्दिर की ओर से संचालित होती है, उसकी ओर आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि वहां 8-16 के बीच आयु की कन्याओं को देवदासी बनाया जाता है और उनका विवाह पाषाण मूर्ति उक्त देवी से किया जाता है।। देवदासी बनी उन कन्याओं को कहा जाता है कि अब वह विवाह योग्य नहीं है, उनका विवाह देवी से हो चुका है। हर वर्ष वहां लोग अपनी कन्याओं को देवदासी बनाने लाते हैं। उनकी संख्या बढ़ती जाती है। बाद में अधिक संख्या के कारण उनको वहां ो निकाला भी जाता है और छोटी उम्र वाली कन्याओं को ही रखा जाता है व नई कन्याओं को शामिल करते हैं। धार्मिक कृत्य मान लेने के कारण इस पर प्रशासन कोई अपराधिक कार्यवाही नहीं करता जबकि इन कन्याओं का जीवन नष्ट किया जाता है। यह प्रथा यह नियम आदि मनुष्य जीवन स्वतन्त्रा व निजता के सिद्धान्त के विरुद्ध है। जो कन्यायें बाद में वहां से छोड़ी जाती हैं उनसे अन्धविश्वासों से ग्रसित हिन्दू विवाह नहीं करते। वह कन्यायें विधर्मी पुरुषाओं द्वारा ले जायी जाती है। उनका क्या होता है पता नहीं। जो विधर्मियों से विवाह करती व साथ रहती हैं वह उनकी जनसंख्या को बढ़ाती है। इस कारण से भी हिन्दुओं की संख्या कम हो रही है परन्तु हिन्दुओं को अपनी इस धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक हानि का न तो ज्ञान है और न ही चिन्ता। श्री कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि एक प्रस्ताव राष्ट्रपति जी और प्रधानमंत्री जी को इसके विरोध व इसे बन्द कराने के लिए भेजना चाहिये। संयोजिका महोदया श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा ने कहा कि इसकी जानकारी प्राप्त कर बाद में इस पर विचार करेंगे। श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने यह भी कहा कि आर्य महिलाओं का राष्ट्रीय स्तर का एक संगठन होना चाहिये। आर्य महिलाओं के उस संगठन द्वारा स्त्री हितों की जो बातें कही जायें उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर महत्व मिलना चाहिये। आर्यसमाज के यह सम्मेलन भी एक प्रकार से रूढ़ि या परम्परा बन गये हैं, इससे किसी प्रकार का कोई लाभ होता नहीं दीखता। आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने मुस्लिम महिलाओं का उल्लेख भी किया और कहा कि उन्होंने संघर्ष करके तलाक व हलाला जैसी समस्याओं को उठाया, विरोध की परवाह नहीं की और आज माननीय सुप्रीम कोर्ट ने तीन तलाक को निषिद्ध कर दिया है।

अध्यक्षीय भाषण में आचार्या डा. प्रियंवदा वेदभारती जी ने कहा कि हमें विचार करना है कि हम आज की भटकी हुई नारी को कैसे सही दिशा दें? आज की नारियां अंधविश्वासों, फैशन और पाखण्डों में भटकी हुई हैं। इन्हें सन्मार्ग पर लाने का प्रयास करना है। उन्होंने कहा कि जब तक गुरूकुल की बेटियां तैंयार नहीं होंगी तब तक समाज का ढांचा सुधरेगा नहीं। उन्होंने आगे कहा कि जब तक वैदिक नारियां नहीं होंगी, देश का कल्याण और नारी का उद्धार नही होगा। उन्होंने नारी की नदी से उपमा देकर बताया कि यदि नारी उद्दड हो जाये तो समाज का नाश हो जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि नारी स्वतन्त्र रूप से धन कमाने का प्रयास करेंगी तो समाज में टूटन होगी। नारियों से जुड़ी अनेक बातों पर भी आचार्या जी ने वैदिक विचारधारा के अनुरूप विचार प्रस्तुत किये।

अपरान्ह तीन बजे से यज्ञ हुआ। आज वर्षा के कारण एक मुख्य यज्ञ कुण्ड में ही यज्ञ हुआ। यज्ञोपरान्त श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ एवं यज्ञ की ब्रह्मा जी के उपदेश हुए। रात्रिकालीन सत्संग भी हुआ जिसमें भजन व उपदेश का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ पं. रमेश चन्द्र स्नेही जी के भजनों से हुआ। उन्होंने दो भजन प्रस्तुत किये। इसके बाद नजीबाबाद गुरूकुल की छात्रा निकेता आर्या का एक गीत हुआ। पानीपत से आये श्री दर्शनलाल आर्य ने अपनी स्वरचित रचना प्रस्तुत की जिसमें एक अजन्मी कन्या अपने माता व पिता पर अपनी जन्म से पूर्व हत्या की साजिश करने का आरोप लगाती है। पानीपत से कीर्तिशेष आर्यविद्वान प्रो. उत्तमचन्द शरर जी के सुपुत्र श्री सुरेश आर्य जी भी आये थे। उनके भी सभी ने दर्शन किये। आज रात्रि कार्यक्रम के समापन से पूर्व दो प्रवचन हुए। पहला प्रवचन आर्य पुरोहित श्री पीयूष शास्त्री का और दूसरा आर्य विद्वान श्री उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का था। श्री पीयूष शास्त्री ने अपने प्रवचन में आत्मविश्वास उत्पन्न करने, उसमें सदैव वृद्धि करने और कभी हतोत्साहित न होने के साथ पुरूषार्थ के महत्व पर बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रकाश डाला। आर्य विद्वान श्री कुलश्रेष्ठ जी ने आत्मा, परमात्मा एवं प्रकृति से जुड़े सभी प्रश्नों का समाधान किया और इन तीनों पदार्थों का यथार्थ स्वरूप श्रोताओं के सामने प्रस्तुत किया। रात्रि 9.30 बजे के बाद कार्यक्रम का समापन शान्तिपाठ से हुआ।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म**

**“विख्यात आर्य विद्वान, गीतकार एवं भजनोपदेशक यशस्वी पं. सत्यपाल पथिक जी का ‘हनुमान चालिसा’ पर आधारित नया भजन भव्य पुस्तक रूप में ‘ऋषि दयानन्द गुणगान’ नाम से प्रकाशित व उपलब्ध’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्य गीतकार एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक आजकल वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के शरदुत्सव पर पधारे हुए हैं। कल 21 सितम्बर, 2017 को रात्रि सभा में पथिक जी के भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ। हम भी इस कार्यक्रम के साक्षी हैं। आपने दो भजन प्रस्तुत किये। एक भजन आपने अपनी नई रचना **‘ऋषि दयानन्द गुणगान’** से प्रस्तुत किया। यह आपकी नवीनतम कृति है। इस पुस्तक में आपका नया भजन पूरा दिया गया है जो **‘हनुमान चालीस’** की धुन पर आधारित है। पूरा भजन गुटका आकार की पुस्तक में 16 पृष्ठों में है। पुस्तक का प्रचारार्थ मूल्य मात्र 10 रूपये है। पथिक जी के भक्त एवं भजन प्रेमी यह पुस्तक मोबाइल नं. 9855098530 या 9872955841 पर फोन करके डाक आदि से प्राप्त कर सकते हैं। यह पुस्तक पथिक जी के यशस्वी पुत्र श्री दिनेश पथिक जी से प्राप्त की जा सकती है। आप उन्हें पत्र भी लिख सकते हैं। उनका पता है **‘श्री दिनेश पथिक, 70-ए, गोकुल नगर, मजीठा रोड, अमृतसर’।**

इस नये भजन की आरम्भिक कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैंः

**महर्षि दयानन्द गुणगान**

**(‘हनुमान चालीस’ की धुन पर)**

दोहा- जग प्रसिद्ध शुभ नाम है दयानन्द ऋषिराज।

योगनिष्ठ प्रभुभक्तवर ऋषियों का सरताज।

दयानन्द नाम प्यारा नाम। दयानन्द नाम प्यारा नाम।।

दोहा- मिल कर के उस देव का करें सभी गुणगान।

सदा सुनी संसार ने बड़ी निराली शान।

दयानन्द नाम प्यारा नाम। दयानन्द नाम प्यारा नाम।।

चौपाई- जग में हुआ जब जन्म तुम्हारा।

चमक उठा कसबा टंकारा।

अमृत बा माता के जाये।

करसन जी के लाल कहाये।

ऋषिवर देव दयानन्द स्वामी।

ईश्वर भक्त वेद पथगामी।

दयानन्द आनन्द का सागर।

ज्ञान पुंज आलोक उजागर।

गुरुवर विरजानन्द का चेला।

निकला सूर्य समान अकेला।

गंगा यमुना की धारायें।

ऋषिवर की गुण गरिमा गायें।

सत्याचरण धर्म अनुरागी।

विशद विशाल महा यशभागी।

दिग्दिगन्त दिग्विजय सुनामी।

अरिदल दलन कुशल संग्रामी।

दोहा- सरदी गरमी धूम हो आंधी या बरसात।

चिन्तन योगाभ्यास में निरत रहे दिन रात।

पथिक जी ने मंच से बताया कि उनके घर में पोते पोतियों को यह भजन स्मरण हो गया है। अब उनको पुस्तक की सहायता की आवश्यकता नहीं होती। आप भी अभ्यास करेंगे तो यह पूरा गीत आपको भी याद हो जायेगा।

हमने इस पूरे भजन को वीडियो कैमरा में रिकार्ड कर लिया है। फाइल बड़ी होने के कारण हम इसे फेशबुक पर साझा नहीं कर पा रहे हैं। यह भी बता दें कि पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर अर्थ सहित गायत्री मन्त्र दिया गया है और कवर पृष्ठ 2 पर **‘छोटी सी बात’** शीर्षक के अन्तर्गत पथिक जी ने इस गीत वा भजन की भूमिका का उल्लेख किया है।

हम आशा करते हैं कि पाठक इस भजन को पसन्द करेंगे।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**